IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

आधुनिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका पर स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के शैक्षिक विचारों का प्रभाव

सोनिया मित्तल[1] and डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र - विभाग

[2]प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र - विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.), भारत

सारांश

शिक्षा केवल ज्ञान, सूचना अथवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया है। भारतीय शिक्षा-दर्शन में स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों विचारकों ने शिक्षा को मनुष्य के आंतरिक विकास तथा उसकी अंतर्निहित क्षमताओं के प्रकटीकरण का साधन माना। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को "मनुष्य-निर्माण", "चरित्र-निर्माण" और आत्मविश्वास के विकास से जोड़ा, जबकि श्री अरविंद ने शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की समग्र प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। विवेकानंद के अनुसार शिक्षक केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि आदर्श चरित्र, प्रेरणा और आत्मबल का स्रोत है।

मुख्य संकेतक: - मनुष्य-निर्माण शिक्षा, समग्र शिक्षा, चरित्र-निर्माण, मूल्य-शिक्षा, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा।

परिचय

आधुनिक युग में शिक्षा व्यवस्था तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शिक्षा, वैश्वीकरण, रोजगार की बदलती आवश्यकताएँ और सामाजिक विविधता ने शिक्षक की पारंपरिक भूमिका को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। वर्तमान शिक्षा में शिक्षक से केवल विषय-विशेषज्ञ होने की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि उससे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों तथा जीवन-कौशल का विकास करने की अपेक्षा की जाती है। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा-दर्शन के महान विचारकों स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के विचार विशेष रूप से प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को व्यक्ति के भीतर पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति माना। उनके शिक्षा-दर्शन का केंद्र "मनुष्य-निर्माण" है। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो व्यक्ति में आत्मविश्वास, निर्भीकता, चरित्र, आत्मनिर्भरता और सेवा-भाव विकसित करे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि विचारों को जीवन में आत्मसात करना है। आधुनिक अध्ययनों में भी विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास से संबंधित समग्र दृष्टिकोण के रूप में देखा गया है।

श्री अरविंद घोष ने शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। उनके "समग्र शिक्षा" के विचार में शरीर, प्राण, मन, उच्चतर मानसिक शक्तियों और आध्यात्मिक चेतना के विकास को महत्व दिया गया। उनके अनुसार प्रत्येक बालक में विकास की विशिष्ट संभावनाएँ होती हैं और शिक्षा का कार्य उन संभावनाओं को पहचानना तथा उनके स्वाभाविक विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध कराना है। आधुनिक व्याख्याओं में श्री अरविंद के शिक्षा-दर्शन को बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को एकीकृत करने वाली दृष्टि माना गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं: -

1. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करना।
2. श्री अरविंद घोष के शिक्षा-दर्शन में शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. दोनों विचारकों के शिक्षक संबंधी विचारों की समानताओं एवं भिन्नताओं का अध्ययन करना।

4. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
5. विद्यार्थी-केंद्रित एवं मूल्य-आधारित शिक्षा में शिक्षक की बदलती भूमिका को स्पष्ट करना।
6. आधुनिक शिक्षक-शिक्षा एवं कक्षा-शिक्षण में विवेकानंद और अरविंद के विचारों के उपयोग की संभावनाओं का अध्ययन करना।

अनुसंधान की पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष की मूल रचनाओं, शिक्षा-दर्शन से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा आधुनिक शिक्षा संबंधी दस्तावेजों का अध्ययन किया गया। प्राप्त सामग्री का विषयवस्तु विश्लेषण करते हुए शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा, चरित्र-निर्माण, आत्म-विकास, समग्र शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा में उनके प्रभाव का विश्लेषण किया गया। विवेकानंद के शिक्षक संबंधी विचारों पर उपलब्ध शोध विशेष रूप से यह दर्शाता है कि उनके "मनुष्य-निर्माण" शिक्षा-दर्शन में शिक्षक प्रेरक, आदर्श एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन वेदांत, मानवतावाद, आत्मविश्वास, चरित्र-निर्माण और राष्ट्रनिर्माण की अवधारणाओं पर आधारित है। वे शिक्षा को व्यक्ति के भीतर निहित शक्तियों को जागृत करने की प्रक्रिया मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का लक्ष्य ऐसी व्यक्तित्व-संपन्न मानव शक्ति का निर्माण करना है जो शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़, बौद्धिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से मजबूत तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी हो।

विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन में "मनुष्य-निर्माण" केंद्रीय अवधारणा है। वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो व्यक्ति में आत्मविश्वास और निर्भीकता उत्पन्न करे। उनका दृष्टिकोण केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि व्यावहारिक जीवन से जुड़ा हुआ था। आधुनिक अध्ययनों में भी उनके शिक्षा-दर्शन के प्रमुख तत्वों में चरित्र-निर्माण, आत्मनिर्भरता, आत्म-साक्षात्कार, व्यावहारिक ज्ञान, योग, नैतिक मूल्य और भारतीय संस्कृति को महत्वपूर्ण माना गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

शिक्षक की भूमिका

विवेकानंद के अनुसार शिक्षक का व्यक्तित्व ही शिक्षा का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला कर्मचारी नहीं है, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का आदर्श होता है। इसलिए शिक्षक में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, आत्मसंयम, सेवा-भाव, सहानुभूति, निर्भीकता और उच्च चरित्र जैसे गुण होना आवश्यक है।

शिक्षक को विद्यार्थियों में छिपी क्षमताओं पर विश्वास करना चाहिए। उसे भय, दबाव और दंड के माध्यम से शिक्षा देने के स्थान पर प्रेम, प्रेरणा और आत्मविश्वास के माध्यम से विद्यार्थियों को विकसित करना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक का कार्य विद्यार्थी की अंतर्निहित शक्ति को जागृत करना है।

श्री अरविंद घोष का शिक्षा-दर्शन

श्री अरविंद घोष का शिक्षा-दर्शन "समग्र शिक्षा" की अवधारणा पर आधारित है। वे शिक्षा को केवल मानसिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं करते, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण अस्तित्व के विकास से जोड़ते हैं। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं को क्रमशः विकसित करके उसे अधिक पूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व प्रदान करना है।

श्री अरविंद के शिक्षा-दर्शन में शारीरिक शिक्षा, प्राणिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, मनोवैज्ञानिक या आंतरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा का समन्वय दिखाई देता है। इस दृष्टिकोण में विद्यार्थी की व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं और विकास की गति का सम्मान किया जाता है। इसलिए यह दृष्टिकोण वर्तमान विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी है।

शिक्षक की भूमिका

श्री अरविंद के अनुसार शिक्षक का प्रमुख कार्य विद्यार्थी को तैयार उत्तर देना नहीं, बल्कि उसे स्वयं सीखने और विकसित होने की प्रक्रिया में सहायता करना है। शिक्षक को विद्यार्थी की प्रकृति, रुचि, क्षमता और मानसिक विकास को समझना चाहिए। उसे अनावश्यक रूप से अपने विचार विद्यार्थी पर आरोपित नहीं करने चाहिए। इस दृष्टिकोण में शिक्षक "नियंत्रक" से अधिक "सहायक और मार्गदर्शक" है। शिक्षक ऐसा वातावरण तैयार करता है जिसमें विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोच सके, प्रश्न पूछ सके, प्रयोग कर सके और अपनी क्षमताओं का

विकास कर सके। यह विचार आज की रचनात्मक, अनुभवात्मक तथा विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा पद्धति के साथ निकटता से जुड़ता है।

आधुनिक शिक्षा में विवेकानंद के विचारों का प्रभाव

आधुनिक शिक्षा में स्वामी विवेकानंद के विचार अनेक स्तरों पर दिखाई देते हैं। पहला महत्वपूर्ण प्रभाव चरित्र-निर्माण पर है। वर्तमान शिक्षा में केवल परीक्षा परिणामों के स्थान पर नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोग, नेतृत्व और जीवन-कौशल को महत्व दिया जा रहा है। यह विवेकानंद की उस दृष्टि से मेल खाता है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य मजबूत चरित्र का निर्माण है।

दूसरा प्रभाव आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के विकास में देखा जा सकता है। आधुनिक शिक्षक विद्यार्थियों को समस्या-समाधान, निर्णय-निर्माण, परियोजना कार्य और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर देता है। इससे विद्यार्थी केवल निर्देशों का पालन करने वाला व्यक्ति न रहकर स्वतंत्र रूप से सोचने वाला व्यक्ति बनता है।

तीसरा प्रभाव समग्र विकास पर है। विवेकानंद ने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को महत्व दिया था। वर्तमान शिक्षा में खेल, योग, कला, जीवन-कौशल, सामाजिक सेवा तथा मानसिक-सामाजिक विकास को शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों में सम्मिलित किया जा रहा है। समकालीन शोध भी विवेकानंद की शिक्षा को समग्र विकास और मूल्य-आधारित शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिक मानता है।

आधुनिक शिक्षा में श्री अरविंद के विचारों का प्रभाव

श्री अरविंद की शिक्षा-दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा में दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा में यह स्वीकार किया गया है कि प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, सीखने की गति और व्यक्तिगत अनुभव अलग-अलग होते हैं। अतः शिक्षक को एक समान पद्धति के बजाय विविध शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव अनुभवात्मक अधिगम में देखा जा सकता है। विद्यार्थी को केवल किताब से ज्ञान देने के स्थान पर प्रयोग, परियोजना, चर्चा, गतिविधि, समस्या-समाधान और वास्तविक जीवन के अनुभवों से सीखने का अवसर देना श्री अरविंद की शिक्षा-दृष्टि से सामंजस्य रखता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 11, June 2026
Impact Factor: 8.2

तीसरा प्रभाव आंतरिक विकास एवं नैतिक शिक्षा पर है। श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बाहरी उपलब्धियों के साथ-साथ व्यक्ति की आंतरिक चेतना का विकास भी है। आधुनिक नैतिक एवं मूल्य-शिक्षा में आत्म-अनुशासन, संवेदनशीलता, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल इसी व्यापक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है।

दोनों विचारकों के अनुसार शिक्षक की भूमिका

आधार	स्वामी विवेकानंद	श्री अरविंद घोष
शिक्षा का उद्देश्य	मनुष्य-निर्माण एवं चरित्र-निर्माण	समग्र व्यक्तित्व एवं चेतना का विकास
शिक्षक की भूमिका	आदर्श, प्रेरक एवं चरित्र-निर्माता	मार्गदर्शक, सहायक एवं विकास-सुविधादाता
विद्यार्थी	अंतर्निहित शक्ति वाला व्यक्ति	विशिष्ट क्षमता एवं विकास-सम्भावना वाला व्यक्ति
शिक्षण का आधार	आत्मविश्वास, अनुशासन, एकाग्रता एवं सेवा	स्वतंत्रता, स्वाभाविक विकास एवं अनुभव
मूल्य	नैतिकता, निर्भीकता, सेवा, आत्मनिर्भरता	सत्य, आत्म-विकास, चेतना एवं समग्रता
प्रमुख लक्ष्य	मजबूत एवं चरित्रवान मनुष्य	समग्र एवं विकसित व्यक्तित्व
आधुनिक प्रासंगिकता	मूल्य-आधारित एवं चरित्र-निर्माण शिक्षा	विद्यार्थी-केंद्रित एवं समग्र शिक्षा

आधुनिक शिक्षक की बदलती भूमिका

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका केवल "ज्ञान प्रदान करने वाले" व्यक्ति की नहीं रह गई है। इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों के कारण विद्यार्थी अनेक प्रकार की सूचनाएँ स्वयं प्राप्त कर सकता है। इसलिए शिक्षक का महत्व कम होने के बजाय उसका स्वरूप बदल गया है। अब शिक्षक को सूचना के चयन, सत्यापन, विश्लेषण और उचित उपयोग में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना पड़ता है।

यह परिवर्तन विवेकानंद और श्री अरविंद दोनों के विचारों से जोड़ा जा सकता है। विवेकानंद शिक्षक से उच्च चरित्र और प्रेरक व्यक्तित्व की अपेक्षा करते हैं, जबकि श्री अरविंद शिक्षक को विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमताओं के विकास में सहायक मानते हैं। इस प्रकार आधुनिक शिक्षक को विषय-विशेषज्ञ के साथ-साथ मार्गदर्शक, प्रेरक, परामर्शदाता, मूल्य-शिक्षक, सह-अध्येता और अधिगम-सुविधादाता की भूमिका निभानी चाहिए।

वर्तमान शिक्षा-परिवर्तन भी शिक्षक को अधिक अनुभवात्मक और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण की ओर ले जा रहा है। उदाहरण के लिए, आधुनिक शिक्षक-प्रशिक्षण में खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित तथा "सीखकर करने" जैसी विधियों पर जोर दिया जा रहा है।

शिक्षक-विद्यार्थी संबंध

विवेकानंद और श्री अरविंद दोनों की शिक्षा-दृष्टि में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध का विशेष महत्व है। विवेकानंद के विचार में शिक्षक को अपने व्यक्तित्व और व्यवहार से विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए। वहीं श्री अरविंद शिक्षक को विद्यार्थी की प्रकृति को समझने और उसके स्वाभाविक विकास में सहयोग करने वाला व्यक्ति मानते हैं।

आधुनिक शिक्षा में भी शिक्षक-विद्यार्थी संबंध अधिगम की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। विद्यार्थी के साथ सम्मानपूर्ण, सहयोगात्मक और संवादात्मक संबंध उसकी सहभागिता और सीखने की प्रक्रिया को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। हाल के शोध में भी शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और शिक्षण शैली के बीच महत्वपूर्ण संबंध की चर्चा की गई है।

मूल्य-आधारित शिक्षा में योगदान

वर्तमान समय में शिक्षा के सामने केवल रोजगारपरक दक्षता विकसित करने की चुनौती नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक विवेक, सामाजिक संवेदनशीलता और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करने की भी आवश्यकता है। विवेकानंद का चरित्र-निर्माण संबंधी विचार इस संदर्भ में अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने शिक्षा को ऐसी शक्ति के रूप में देखा जो व्यक्ति को आत्मविश्वासी, नैतिक और समाजोपयोगी बनाती है।

श्री अरविंद की दृष्टि में भी नैतिक विकास केवल बाहरी नियमों का पालन नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना के विकास से संबंधित है। आधुनिक शोध में उनके शिक्षा-दर्शन को बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास के साथ नैतिक चेतना के विकास से जोड़ा गया है।

आधुनिक शिक्षक-शिक्षा में प्रासंगिकता

शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में विवेकानंद और श्री अरविंद के विचारों को शामिल करके शिक्षक के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर बल दिया जा सकता है। शिक्षक-प्रशिक्षण में विषय-ज्ञान के साथ नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान, आत्म-अनुशासन, संवाद कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, परामर्श कौशल और नेतृत्व क्षमता को महत्व दिया जाना चाहिए।

विवेकानंद से शिक्षक को चरित्र और सेवा का आदर्श प्राप्त होता है, जबकि श्री अरविंद से विद्यार्थी की स्वतंत्रता, वैयक्तिकता और समग्र विकास का दृष्टिकोण प्राप्त होता है। दोनों विचारों का समन्वय आधुनिक शिक्षक को अधिक मानवीय और प्रभावी बना सकता है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद घोष के शैक्षिक विचार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। विवेकानंद ने शिक्षा को मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास और राष्ट्रनिर्माण से जोड़ा, जबकि श्री अरविंद ने शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास और अंतर्निहित क्षमताओं के क्रमिक विकास की प्रक्रिया माना। दोनों विचारकों के लिए शिक्षक का कार्य केवल पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करना नहीं था।

विवेकानंद के दृष्टिकोण में शिक्षक स्वयं आदर्श बनकर विद्यार्थियों को प्रेरित करता है, जबकि श्री अरविंद के दृष्टिकोण में शिक्षक विद्यार्थी की स्वतंत्र विकास-यात्रा में सहायक और मार्गदर्शक होता है। आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थी-केंद्रित अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा, योग एवं शारीरिक शिक्षा, रचनात्मकता, आत्म-अनुशासन और समग्र विकास जैसे तत्व इन दोनों विचारकों की शिक्षादृष्टि के साथ पर्याप्त सामंजस्य रखते हैं।

अतः आधुनिक शिक्षक को केवल "ज्ञान देने वाला" नहीं, बल्कि ज्ञान का मार्गदर्शक, चरित्र का निर्माता, प्रेरक, परामर्शदाता, मूल्य-संवर्धक और विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमताओं का विकासकर्ता बनना चाहिए। यही विवेकानंद और श्री अरविंद के शिक्षा-दर्शन की आधुनिक शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है।

संदर्भ सूची

1. अरविंद, श्री. (1990). शिक्षा पर। श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन।
2. अरविंद, श्री. (1999). मानव चक्र। श्री अरविंद आश्रम।

3. अरविंद, श्री. (2005). द लाइफ डिवाइन। श्री अरविंद आश्रम।
4. अरविंद, श्री. (2011). द ह्यूमन साइकिल। श्री अरविंद आश्रम।
5. अरविंद, श्री. (2012). सावित्री: एक किंवदंती और एक प्रतीक। श्री अरविंद आश्रम।
6. बनर्जी, ए. के., एवं मीता, एम. (2015). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 4(3), 30–35।
7. बेहरा, एस. के. (2019). स्वामी विवेकानंद की "मनुष्य-निर्माण" शिक्षा में शिक्षक की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 8(3), 786–795।
8. दत्ता, आर. (2025). स्वामी विवेकानंद के मनुष्य-निर्माण एवं चरित्र-निर्माण संबंधी शैक्षिक विचार। रिसर्च रिव्यू जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 5(2)।
9. मिश्रा, वी. (2014). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन। देव संस्कृति इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल, 3, 10–18।
10. कश्यप, एन. (2024). श्री अरविंद के दर्शन में नैतिक एवं नैतिक विकास: शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण। इंटीग्रल रिसर्च, 1(9), 164–170।
11. शुक्ला, पी. (2025). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन। इंटीग्रल रिसर्च, 2(5), 82–87।
12. सिंह, पी., एवं देवी, आर. (2024). स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली पर इसका प्रभाव। शोधकोष: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(3)।
13. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
14. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन से संबंधित दिशानिर्देश। भारत सरकार।
15. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा: स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023। एनसीईआरटी।
16. श्री अरविंद आश्रम। (1972). श्री अरविंद के संकलित लेख: शिक्षा और संस्कृति। श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन।
17. रामकृष्ण मिशन। (2018). स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार एवं मानव निर्माण की अवधारणा। रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
18. विवेकानंद, स्वामी। (2006). स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण रचनावली। अद्वैत आश्रम।

19. विवेकानंद, स्वामी। (2010). शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्रनिर्माण पर स्वामी विवेकानंद के विचार। रामकृष्ण मठ एवं मिशन प्रकाशन।
20. श्री अरविंद आश्रम। (1990). ऑन एजुकेशन: श्री अरविंद के शैक्षिक लेख एवं पत्र। श्री अरविंद आश्रम प्रकाशन।